अन्दर अँधेरे में लेटे गजाधर बाबू अपनी बेटी और बेटों की बातें सुनकर दुखी हो गए और थोड़ी देर बाद हाथ में चिट्ठी लिए हुए अन्दर आए और पत्नी को पुकारकर कहा कि उन्हें सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिल रही है। खाली बैठे रहने से तो अच्छा है, हाथ में चार पैसे आए, वही अच्छा है। फिर धीमे स्वर में कहने लगे, मैंने सोचा था कि बरसों तुम सब से अलग रहने के बाद अवकाश प्राप्त कर परिवार के साथ में रहूँगा। खैर, परसों जाना है, तुम भी चलोगी?" किन्तु पत्नी ने सकपकाकर कहा- मैं चलूँगी तो यहाँ क्या होगा, इतनी बड़ी गृहस्थी है फिर सयानी लड़की... बात बीच में ही काटकर गजाधर बाबू ने हताश स्वर में कहा- "ठीक है, तुम यहीं रहो, मैंने तो ऐसे ही कहा था।

गजाधर बाबू के जाने के लिए उनके बेटे नरेन्द्र ने बड़ी तत्परता से बिस्तर बाँधा और रिक्शा बुला लाया। गजाधर बाबू ने एक दृष्टि अपने परिवार पर डाली, फिर दूसरी ओर देखने लगे। रिक्शा चल पड़ा। उनके जाने के बाद सब अंदर लौट आए। आते ही बहू ने अमर से पूछा- "सिनेमा ले चलिएगा न? बसंती ने उछलकर कहा- "भैया हमें भी।" नरेन्द्र की माँ ने नरेन्द्र से कहा- "अरे नरेन्द्र, बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं है।

बी. ए. पार्ट II
(Hindi Hons) Paper-II
"Wapsi Kahani ka sar"

उसका और उसकी बहू का कहना है कि गजाधर बाबू तो हमेशा बैठक ही में पड़े रहते हैं, कोई आने जाने वाला हो तो, घर में बैठने की जगह नहीं है। इस पर गजाधर बाबू ने अपनी पत्नी से पूछा - "हमारे आने के पहले तो कभी ऐसी बात नहीं हुयी?" इसके उत्तर में पत्नी द्वारा सिर हिला देने पर उन्होंने कहा- "अमर से कहो, ज्यादा बाजी की कोई जरूरत नहीं।"

अगले दिन वह घूमकर लौटे तो उन्होंने देखा कि उनकी चारपाई बैठक नहीं थी बल्कि पत्नी की कोठरी में रजाइयों और कनस्तरों के बीच उनकी चारपाई लगी हुयी है। गजाधर बाबू का अपना बड़ा-सा खुला क्वार्टर, स्टेशन की चहल-पहल, निश्चिन्त जीवन, सब याद आने लगे और अपने अतीत में खोये हुए कहीं और समाने लगे। उन्हें लगा वह अपनी जिन्दगी के द्वारा ठगे गए हैं। उन्होंने जो कुछ चाहा, उसकी एक बूँद भी उन्हें नहीं मिली। उन्होंने अनुभव किया, वह पत्नी और बच्चों के लिए मात्र धन कमाने के साधन थे। उनकी पत्नी उनके सम्मुख उनके सामने दो वक्त के भोजन की थाली रख देने मात्र से पति के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा हुआ समझती थी। वह चौ-चीजों के डिब्बों में इतना खोयी रही कि वही अब उसकी संपूर्ण दुनिया बन गयी है। उन्हें महसूस हुआ कि उनके घर का रहन-सहन उनकी खर्च की है सियत से ज्यादा हो गया है। अनावश्यक रूप से नौकर रखा हुआ है, इसलिए एक दिन उन्होंने नौकर को बुलाकर छुट्टी कर दी। अमर जब दफ्तर से घर लौटा तो नौकर को पुकारने लगा। तो उसकी बहू ने बताया कि नौकर की छुट्टी कर दी गई है कहते हैं, बहुत खर्च है। यह सुनकर अमर को बहुत बुरा लगा।

कुछ दिनों बाद गजाधर बाबू की घर में उपस्थिति से बेखबर नरेन्द्र माँ से कहने लगा - "अम्मा, तुम बाबूजी से कहती क्यों नहीं? बैठे-बिठाए कुछ नहीं तो नौकर ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी समझते हैं कि मैं साइकिल पर बोरी रखकर आटा पिसाने जाऊँगा तो मुझसे यह नहीं होगा।"

बसंती बोली - "हाँ अम्मा! मैं कॉलेज भी जाऊँ और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊँ, यह मेरे बस की बात नहीं है।"

अमर बोला - "बूढ़े आदमी हैं, चुपचाप रहें। हर चीज में दखल क्यों देते हैं?" P.T.O

...... गया है।

P.T.O

ने गजाधर बाबू को देखा और कहा– 'अरे आप अकेले बैठे हैं, ये सब कहाँ गए?

गजाधर बाबू के मन में अत्यधिक दुख हुआ, लेकिन दुख को छुपाते हुए बोले – "अपने-अपने काम में लग गए हैं आखिर बच्चे ही हैं।" चाय और नाश्ते के इंतजार में बैठे अचानक गजाधर बाबू को गनेशी की याद आ गई। वह सोचने लगे कि कितना अपनत्व भरा प्रेम और सम्मान उन्हें गनेशी से मिला। अभी वह इन विचारों में खोये हुए थे कि पत्नी ने शिकायत भरे लहजे में कहा कि उसका सारा दिन गृहस्थी के खिच-खिच में चला जाता है। कोई भी उसके काम में सहयोग नहीं करता। इस पर गजाधर बाबू ने अपनी बेटी बसंती को बुलाकर यह आदेश दिया कि आज शाम से खाना वह बनाएगी और सुबह अमर की बहू। इसके उत्तर में बसंती ने मुँह लटकाकर जवाब दिया कि उसे पढ़ना भी तो है। लेकिन बाबूजी उसकी एक न सुनी। शाम को बसंती ने जानबूझकर ऐसा अस्वादिष्ट खाना बनाया कि परिवार के किसी भी सदस्य को पसंद नहीं आया। ऐसा ही अमर के बहू ने भी किया। उसने सुबह के भोजन तैयार करने में ही घी का आधा डिब्बा खतम कर दिया।

घर में रहने के लिए गजाधर बाबू के पास कोई स्थान नहीं बचा था। जैसे मेहमान के लिए कुछ प्रबंध कर दिया जाता है, वैसे ही उनके लिए भी कर दिया गया था। एक दिन पत्नी से गजाधर बाबू ने कहा कि हाथ में पैसा रहता है कम रहता है तो कुछ कम खर्च होना चाहिए, तो पत्नी बोली– "सभी खर्च तो वाजिब-वाजिब हैं, किसका पेट काटूं? यही जोड़ गाँठ करते-करते बूढ़ी हो गयी हूँ, न मन का पहना न ओढ़ा।" यह सुनते ही गजाधर बाबू चुप हो गए तथा आहत और विस्मित होकर पत्नी को देखने लगे। पत्नी द्वारा बसंती की शिकायत किए जाने पर गजाधर बाबू ने एक दिन अपनी पड़ोसन शीला के यहाँ जाने से बसंती को मना कर दिया तो वह रूठ गयी और उस दिन से वह बच-बच कर रहने लगी। एक दिन पत्नी ने उन्हें सूचना दी कि अमर अलग रहने की सोचने लगा है।

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा.

वापसी (उषा प्रियंवदा)

प्रश्न :- 'वापसी' कहानी का सारांश अपने शब्दों लिखिए।

उत्तर : 'वापसी' कहानी उषा प्रियंवदा द्वारा रचित एक मार्मिक कहानी में गजाधर बाबू के माध्यम से उनके सेवा-निवृत्त जीवन पर प्रकाश डाला गया है। गजाधर बाबू रेलवे में एक छोटे से स्टेशन में स्टेशन मास्टर थे। पद से रिटायर होने के बाद वह घर लौटने की तैयारी करने लगे। मन ही मन वह इस बात से खुश हो रहे थे कि अपने परिवार से मिलेंगे। उन्हें देखकर पत्नी, पुत्री-पुत्र पुत्रवधु सभी खुश होंगे। उनका नौकर गणेशी घर से बेसन का बना लड्डू ले आया था जिसे गजाधर बाबू बड़े चाव से खाते थे। गजाधर बाबू के मन में एक ओर घर जाने की खुशी थी, दूसरी ओर गणेशी से बिछड़े जाने का गम भी था। उस रेलवे क्वार्टर में उन्होंने अनेक वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से वह कमरा अब नग्न और बदसूरत लग रहा था। उनके द्वारा रोपे गए पौधे भी उनके जान-पहचान वाले लोग गए थे। जगह-जगह मिट्टी बिखरी थी। लेकिन बाल-बच्चों एवं पत्नी के साथ रहने का सुख की कल्पना से उनका दुख कुछ कम हो रहा था।

पैंतीस साल की नौकरी के बाद जिस दिन वह घर लौटे, वह इतवार का दिन था। उनके बच्चे उस समय नाश्ता कर रहे थे। अंदर से कहकहों की आवाज आ रही थी जिसे सुनकर उनके चेहरे पर मुस्कान आ गयी। अपने बच्चों की उन्मुक्त हँसी देखने वह खाँसते हुए अंदर चले गए, उन्होंने देखा नरेन्द्र अपनी कमर पर हाथ डाले कोई नृत्य कर रहा है और बसंती हँस-हँस कर दोहरी हुई जा रही है। अमर की बहू को अपने तन-मन और आँचल का कोई होश न था। वह भी उन्मुक्त हो हँस रही थी। गजाधर बाबू को देखते ही नरेन्द्र धप से बैठ गया और एक प्याला मुँह से लगा लिया। बहू को होश आया तो माथा आँचल से ढँक लिया। केवल बसंती ही हँसती रही। धीरे-धीरे सभी लोग वहाँ से खिसक गए और गजाधर बाबू अकेले रह गए। पूजा से निवृत होकर जब पत्नी

P.T.O